फरीदाबाद

मजदूर समाचार

राहें तलाशने-बनाने के लिए मजदूरों के अनुभवों व विचारों के आदान-प्रदान के जरियों में एक जरिया

नई सीरीज नम्बर 181 जुलाई 2003

कहत कबीर
ठीक वह है, सही वह है जो सीधे-सच्चे व्यवहार के लिये समय/स्थान बढाये।

आप-हम क्या-क्या करते हैं... (5)

अपने स्वयं की चर्चायें कम की जाती हैं। खुद की जो बातें की जाती हैं वो भी अक्सर हाँकने-फाँकने वाली होती हैं, स्वयं को इक्कीस और अपने जैसों को उन्नीस दिखाने वाली होती हैं। या फिर, अपने बारे में हम उन बातों को करते हैं जो हमें जीवन में घटनायें लगती हैं — जब-तब हुई अथवा होने वाली बातें। अपने खुद के सामान्य दैनिक जीवन की चर्चायें बहुत-ही कम की जाती हैं। ऐसा क्यों है? ✱ सहज-सामान्य को ओझल करना और असामान्य को उभारना ऊँच-नीच वाली समाज व्यवस्थाओं के आधार-स्तम्भों में लगता है। घटनायें और घटनाओं की रचना सिर-माथों पर बैठों की जीवनक्रिया है। विगत में भाण्ड-भाट-चारण-कलाकार लोग प्रभुओं के माफिक रंग-रोगन से सामान्य को असामान्य प्रस्तुत करते थे। छुटपुट घटनाओं को महाघटनाओं में बदल कर अमर कृतियों के स्वप्न देखे जाते थे। आज घटना-उद्योग के इर्दगिर्द विभिन्न कोटियों के विशेषज्ञों की कतारें लगी हैं। सिर-माथों वाले पिरामिडों के ताने-बाने का प्रभाव है और यह एक कारण है कि हम स्वयं के बारे में भी घटना-रूपी बातें करते हैं। ✱ बातों के सतही, छिछली होने का कारण ऊँच-नीच वाली समाज व्यवस्था में व्यक्ति की स्थिति गौण होना लगता है। वर्तमान समाज में व्यक्ति इस कदर गौण हो गई है कि व्यक्ति का होना अथवा नहीं होना बराबर जैसा लगने लगा है। खुद को तीसमारखाँ प्रस्तुत करने, दूसरे को उन्नीस दिखाने की महामारी का यह एक कारण लगता है। ✱ और, अपना सामान्य दैनिक जीवन हमें आमतौर पर इतना नीरस लगता है कि इसकी चर्चा स्वयं को ही अरुचिकर लगती है। सुनने वालों के लिये अक्सर "नया कुछ" नहीं होता इन बातों में। ✱ हमें लगता है कि अपने-अपने सामान्य दैनिक जीवन को "अनदेखा करने की आदत" के पार जा कर हम देखना शुरू करेंगे तो बोझिल-उबाऊ-नीरस के दर्शन तो हमें होंगे ही, लेकिन यह ऊँच-नीच के स्तम्भों के रंग-रोगन को भी नोच देगा। तथा, अपने सामान्य दैनिक जीवन की चर्चा और अन्यों के सामान्य दैनिक जीवन की बातें सुनना सिर-माथों से बने स्तम्भों को डगमग कर देंगे। ✱ कपड़े बदलने के क्षणों में भी हमारे मन-मस्तिष्क में अक्सर कितना-कुछ होता है! लेकिन यहाँ हम बहुत-ही खुरदरे ढँग से आरम्भ कर पा रहे हैं। मित्रों के सामान्य दैनिक जीवन की झलक जारी है।

ओखला (दिल्ली) में काम करता

35 वर्षीय मजदूर : "दो साल ही हुये हैं मुझे मजदूर बने। दो वर्षों में ही मैं सिले-कढे वस्त्रों का निर्यात के लिये उत्पादन करने वाली चार फैक्ट्रियों में काम कर चुका हूँ तथा पाँचवीं में काम कर रहा हूँ। मैं फरीदाबाद में इविनिक्स एक्सपोर्ट, सागा एक्सपोर्ट, पी-एम्परो एक्सपोर्ट तथा नोएडा में ओरियन्ट क्राफ्ट में काम कर चुकने के बाद अब ओखला फेज I में एक फैक्ट्री में सिलाई कारीगर हूँ। दौर ही ऐसा आ गया है कि 4 महीने यहाँ काम करो और 6 महीने वहाँ — कम्पनियों ने मजदूरों को परमानेन्ट करना बन्द कर दिया है।

नौकरी करने की मेरी कोई इच्छा नहीं थी। मैंने क्या-क्या और कहाँ-कहाँ धन्धे किये! लेकिन इस समय छोटे धन्धों के जो हाल हैं उन्हें देखते हुये नौकरी ही ठीक लगती है क्योंकि छोटे धन्धे चल नहीं पा रहे।

आरम्भ हृदय रोग से

गोरखपुर जिले के गाँव में मैं दसवीं में पढता था तब मेरे सीने में दर्द होने लगा था। जगह-जगह जाँच/इलाज करवाने के बाद दिल्ली में मेडिकल में जाँच में मेरे हृदय का वाल्व सिकुड़ा पाया गया। मामला गम्भीर — 1987 में मेडिकल में मेरे हृदय की बाईपास सर्जरी हुई। ऑपरेशन सफल रहा। छह-सात हजार रुपये खर्च हुये — आज की तरह एक लाख से ऊपर लगते तो मैं मर चुका होता।

धन्धे-दर-धन्धे

ठीक होने के बाद मैंने 12वीं की और आगे इसलिये नहीं पढा कि हृदय ऑपरेशन के कारण सरकारी नौकरी तो मिलेगी नहीं। कमाई के लिये 1989 में मैं बम्बई गया। वहाँ भिवंडी में गाँव के परिचित की कपड़े की दुकान पर एक महीने ही नौकरी कर पाया। ताबेदारी की जलालत और चौतरफा गन्दगी के मारे मैं अपने चचेरे भाई के पास पूना चला गया। भाई एक बेकरी में रहते थे और सुबह 5 से 7 बजे तक पाव-बिस्कुट बेचते थे तथा शाम को फुटपाथ पर कपड़े की दुकान लगाते थे। बम्बई में नौकरी में कमाये दो सौ रुपये से मैंने पूना में पटरी पर महिलाओं का सिंगार सामान बेचने का धन्धा शुरू किया। छह महीने बाद मैं जूते-चप्पल बेचने लगा और साल-भर वह करने के बाद कपड़े बेचना शुरू किया। पहले-पहल पटरी दुकानदारों को ज्यादा परेशानी नहीं थी, बस नगर निगम की गाड़ी दिखती थी तब हम सामान बटोर कर गलियों में भाग जाते थे। लेकिन नगर निगम ज्यादा परेशान करने लगा तो 91 के अन्त में मैं पूना छोड़ कर अपने भाई के पास गुड़गाँव पहुँचा।

दिल्ली की आजादपुर सब्जी मण्डी से हफ्ते की हफ्ते बोरी-पेटियाँ उठा कर मैं गुड़गाँव में रेहड़ी पर सब्जी बेचने लगा। मेहनत बहुत थी और दो बन्दे चाहियें थे पर मुझे अकेले करना पड़ा — फरीदाबाद में फ्लाईव्हील फैक्ट्री बन्द हो जाने के बाद भाई गुड़गाँव में एक फैक्ट्री में लगा था। पाँच महीने बाद मैंने सब्जी बेचनी बन्द कर दी और फरीदाबाद आ गया — यहाँ भाई की झुग्गी थी।

चाँदनी चौक, दिल्ली में कपड़े की थोक मण्डी से माल खरीद कर मैं फरीदाबाद में पटरी पर शर्ट-पैन्ट पीस बेचने लगा और साल-भर यह किया। फिर गोरखपुर में गाँव की बगल में एक बन्दे के प्रोत्साहन पर धन्धा करने थाइलैण्ड की राजधानी बैंकाक गया — 1994 में पासपोर्ट, 4 महीने के टूरिस्ट वीजा और विमान यात्रा टिकट पर 12 हजार रुपये खर्च आया था।

धन्धे बैंकाक में

भ्रमण की आड़ में बहुत लोग धन्धे करते हैं और ऐसा करने हम 4 बन्दे 1994 में बैंकाक गये। हमें साथ ले गया बन्दा वहाँ फेरी लगा कर मच्छरदानी बेचता था। हम चारों एक कमरे में रुके। हमें थाई भाषा नहीं आती थी, कोई मदद करने वाले नहीं थे और हम खो से गये — 10-15 दिन ऐसे ही निकल गये। हमारे पास पैसे बिलकुल नहीं बचे थे और हमें साथ ले जाने वाला भोजन के सिवा हमारी कोई सहायता नहीं कर रहा था। भारत से बैंकाक (बाकी पेज तीन पर)

कानून हैं शोषण के लिये और छूट है कानून से परे शोषण की

कानून हैं – ●साप्ताहिक छुट्टी के बाद हरियाणा में हैल्पर को इस समय महीने की कम से कम तनखा 2197 रुपये 84 पैसे, अर्ध-कुशल को 2307 रुपये 84 पैसे, कुशल को 2457 रुपये 84 पैसे, उच्च कुशल मजदूर को 2757 रुपये 84 पैसे कम से कम; ●जहाँ एक हजार से कम मजदूर हैं वहाँ वेतन 7 तारीख से पहले और जिस कम्पनी में हजार से ज्यादा हैं वहाँ 10 तारीख से पहले; ●स्थाई काम के लिये स्थाई मजदूर, आठ महीने लगातार काम करने पर परमानेन्ट; ●ओवर टाइम समेत एक हफ्ते में 60 घण्टों से ज्यादा काम नहीं लेना, तीन महीनों में 75 घण्टों से ज्यादा ओवर टाइम काम नहीं, ओवर टाइम के लिये पेमेन्ट डबल रेट से; ●फैक्ट्री शुरू होने के पहले दिन से प्रोविडेन्ट फण्ड, मजदूर के वेतन (बेसिक व डी.ए.) से 10 प्रतिशत काटना और 10 प्रतिशत कम्पनी ने देना, हर महीने 15 तारीख से पहले यह 20 प्रतिशत राशि मजदूर के भविष्य निधि खाते में जमा करना; ●फैक्ट्री में एक घण्टे की ड्युटी पर भी ई.एस.आई.; ●कैजुअल व ठेकेदारों के जरिये रखे मजदूरों को भी 20 दिन पर एक दिन की अर्न्ड छुट्टी तथा त्यौहारी छुट्टियाँ;

नागपाल इन्डस्ट्रीज मजदूर: "प्लॉट 65 सैक्टर-6 स्थित फैक्ट्री में कुछ वरकरों के ही ई.एस.आई. तथा पी.एफ. हैं। हैल्परों को कम्पनी 1600-1700 रुपये महीना तनखा देती है और फैक्ट्री में चोट लगने पर पट्टी तक नहीं करवाते, गाली दे कर भगा देते हैं।"

सेक्युरिटी गार्ड: "कोठी 1217 सैक्टर-15 से संचालित **पैरामाउन्ट हन्टर सेक्युरिटी** हम से हर रोज 12 घण्टे ड्युटी लेती है, महीने के तीसों दिन और बदले में 2200 रुपये महीना देती है। प्लॉट 49 सैक्टर-27 सी स्थित **सोलमैक्स** हो चाहे 15/1 मथुरा रोड़ स्थित **के.जी. निटिंग** फण्ड भी नहीं है। हैल्पर को 12 घण्टे ड्युटी के महीने में 1500 रुपये तनखा देते हैं। इन 12 घण्टों से ऊपर जो काम करवाते हैं उसे ओवर टाइम कहते हैं और उसके पैसे सिंगल रेट से देते हैं।"

रायल टूल्स मजदूर: "प्लॉट 74-75 सैक्टर-24 में रायल टूल्स के साथ बी.एन. इन्डस्ट्रीज नाम भी है और यहाँ **यामाहा, मारुति, आयशर** कम्पनियों का काम होता है। आठ ठेकेदारों के जरिये रखे जाते मजदूरों को 1200 रुपये महीना तनखा दी जाती है और कम्पनी द्वारा स्वयं रखे जातों को 1400 रुपये। हर रोज 12 घण्टे काम करना पड़ता है – 4 घण्टे ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से। फैक्ट्री में चोटें बहुत लगती रहती हैं – ज्यादा चोट लगने पर नौकरी से निकाल देते हैं। एक फोरमैन की चार उँगलियाँ कट गई – उसे नौकरी से निकाल दिया। ई.एस.आई कार्ड नहीं, प्रोविडेन्ट फण्ड नहीं।"

कम्पनियों की लगाम

हर कार्यस्थल पर हजारों तार होते हैं; हजारों नट-बोल्ट होते हैं; नालियाँ-सीवर होते हैं; कई-कई ऑपरेशन होते हैं; रात-दिन को लपेटे शिफ्टें होती हैं। इसलिये मैनेजमेन्टों को रोकने-डाटने के लिये मजदूरों के हाथों में कारगर लगाम हैं: ✱ पाँच साल दौड़ने वाली मशीनें छह महीनों में टें बोल दें; ✱ कच्चा माल-तेल-बिजली उत्पादन के लिये आवश्यक मात्रा से डेढी-दुगनी इस्तेमाल हो; ✱ ऑपरेशन उल्टे-पल्टे हो कर क्वालिटी को गँगा नहा दें; ✱ बिजली कभी कड़के, कभी दमके, कभी आँख-मिचौनी करने मक्का-मदीना चली जाये; ✱ अरजेन्ट मचा रखी हो तब ऐसे ब्रेक डाउन हों कि साहबों को ह्रदय रोग हो जायें।

बिना किसी प्रकार की झिझक के, शान्त मन से, ठन्डे दिमाग से सोच-विचार कर कदम उठाने चाहियें।

या फिर 14/6 मथुरा रोड़ स्थित **राउल** फैक्ट्री, पैरामाउन्ट हन्टर सेक्युरिटी ने गार्डों को 12-12 घण्टों की शिफ्ट ड्युटी पर लगा रखा है और कोई साप्ताहिक छुट्टी नहीं।"

शरणस् टेक्नोक्रेट्स मजदूर: "प्लॉट 72 सैक्टर-24 स्थित फैक्ट्री में भर्ती ठेकेदार के जरिये करते हैं। हैल्परों की तनखा 1200 और ऑपरेटरों की 1300-1400-1500 रुपये महीना है। इन्हीं तनखाओं पर ओवर टाइम काम के पैसे सिंगल रेट से देते हैं। फैक्ट्री में **टेकमसेह** कम्प्रेसर के क्रैन्क केस की मशीनिंग होती है। बहुत कचरा उड़ता है, मास्क नहीं देते। मशीनों पर गार्ड नहीं हैं – गरम कण शरीर-कपड़ों को जलाते रहते हैं।"

ब्रॉन लैब वरकर: "13 इन्डस्ट्रीयल एरिया स्थित इस दवाई फैक्ट्री में हमें मई का वेतन आज 20 जून तक नहीं दिया है।"

नैपको गियर मजदूर: "20/4 मथुरा रोड़ फैक्ट्री में तनखा देरी से देने का सिलसिला जारी है – मई का वेतन 23 जून को जा कर दिया।"

भूपेन्द्रा स्टील वरकर: "प्लॉट 25 सैक्टर-6 स्थित फैक्ट्री में 500 मजदूरों में से 20-25 ही कम्पनी ने स्वयं रखे हैं और बाकी हम सब को 8-10 ठेकेदारों के जरिये रखा है। हमें ई.एस.आई. कार्ड नहीं देते और हमारा प्रोविडेन्ट

क्लच आटो वरकर: "सराय के पास मथुरा रोड़ पर स्थित फैक्ट्री में मई की तनखा आज 21 जून तक देनी भी शुरू नहीं की है।"

सुपर स्विच मजदूर: "प्लॉट 5 सैक्टर-6 स्थित फैक्ट्री में मई का वेतन आज 25 जून तक नहीं दिया है। बरसों से काम कर रहों को 1500-1600 रुपये तनखा देते हैं। ई.एस.आई कार्ड नहीं, प्रोविडेन्ट फण्ड नहीं।"

हिन्द हाइड्रोलिक्स वरकर: "प्लॉट 13 सैक्टर-24 में ड्युटी घण्टों के हिसाब से है लेकिन फैक्ट्री के अन्दर जाने के बाद बाहर निकलने देने का समय कम्पनी की मर्जी पर है। अन्दर सुबह 8 बजे और बाहर आमतौर पर रात साढे सात बजे। दोपहर के भोजन के समय फैक्ट्री से बाहर नहीं जाने देते। नौकरी पर रखने से पहले कोरे कागज पर हस्ताक्षर करवाते हैं। डायरेक्टर सुखदेव बहुत गालियाँ देता है, कान पकड़ कर मरोड़ देता है, थप्पड़ भी मार देता है। स्टाफ को ही ई.एस.आई. कार्ड दिये हैं, मजदूरों को नहीं। ज्यादा चोट लगने पर चन्द्रा अस्पताल में इलाज करवाते हैं – न भी करवायें, साहब के मूड की बात है। हैल्पर को 6 रुपये घण्टा, वैल्डर को साढे नो, फैब्रिकेटर को 10 और बोरिंग वालों को 20 रुपये घण्टा देते हैं। ओवर टाइम नाम की चीज नहीं है। कम्पनी न तो रविवार को मानती और न ही किसी त्यौहार को – कोई छुट्टी नहीं होती। फैक्ट्री में दबाव इस कदर है कि पेशाब करने जाने पर भी टोकते हैं।"

एस्कोर्ट्स मजदूर: "पाँच-छह महीनों से एस्कोर्ट्स ऑटोमोटिव में हमें कम्पनी समय पर वेतन नहीं दे रही। मई की तनखा 20 जून को जा कर हमें दी है।"

अनुभव-विचार

टी.टी. आई. मजदूर: "इन 6 वर्षों में हम एटक, एच एम के पी, इफ्टू, यू टी यू सी (ले सा) और एच एम एस को आजमा चुके हैं। हमें कोई राहत नहीं मिली है।"

कास्टमास्टर वरकर: "राहत के लिये हम ने एटक की यूनियन बनाई लेकिन वह मैनेजमेन्ट से मिल गई। इस पर हम ने एल एम एस की यूनियन बनाई जिसने पहले तो हमें गेट के बाहर बैठाया और फिर कम्पनी से मिल कर 35-40 लोगों का हिसाब करवा दिया। ऐसे में हम ने तीसरी यूनियन, एच एम एस का झण्डा लगाया। तीसरी यूनियन ने रही-सही कसर भी निकाल दी और बाकी बचे मजदूरों की नौकरियाँ भी गई। हिसाब के लिये मजबूर करने की इस प्रक्रिया के दौरान कम्पनी ने 35-40 परमानेन्ट मजदूरों और 60-65 स्टाफ वालों को फैक्ट्री के अन्दर रखा और वहीं उनका खाना-पीना-सोना चला। कम्पनी ने फैक्ट्री गेट पर प्रायवेट सेक्युरिटी लगाई और सैक्टर-7 थाने की पुलिस पूरे दल-बल के साथ कम्पनी की हाजरी बजाती रही।"

आप-हम क्या-क्या करते हैं... (पेज एक का शेष)

जा कर बस गये एक बन्दे ने ऐसे में मुझे धन्धा शुरू करने के लिये एक सौ रुपये दिये और थोड़ी थाई भाषा भी सिखाई। मैंने 50 रुपये में बच्चों के खाने की चीजें ले कर स्कूलों के सामने बेचनी शुरू की। फिर मैंने फेरी लगा कर कच्छे बेचे और उसके बाद घूम-घूम कर कमीज, टी-शर्ट, पैन्ट-कोट बेचे। टूरिस्ट वीजा पर धन्धा करना अवैध होता है इसलिये एक स्थान पर टिक कर नहीं बेचता था।

भ्रमण वीजा नवीनीकरण के लिये दो महीने बाद एक एजेन्सी के जरिये अपने जैसे 15 लोगों के साथ थाईलैण्ड की सीमा पार कर लाओस गया। वहाँ हफ्ते-भर नाचने-गाने के दौरान दूतावास से मोहर लगवा कर दो महीने वीजा बढवाया और फिर बैंकाक लौट कर धन्धा शुरू किया। लाओस जाने-ठहरने-लौटने का खर्च एजेन्सी 4 हजार रुपये प्रति व्यक्ति लेती थी और हर दो महीने बाद हमें यह करना पड़ता था। इस प्रकार मैंने बैंकाक में साल-भर गुजारा।

मेरे जैसे बहुत लोग यह सब कर रहे थे कि मार्च 95 में थाई सरकार ने हम लोगों की तुरन्त गिरफ्तारी के आदेश दिये। रात-दिन छापे पड़ने लगे और कई लोग जेल में डाल दिये गये। एक हफ्ते तक तो मैं कमरे से नहीं निकला। फिर एक दिन बस से माल समेत उतरा ही था कि खुफिया पुलिस ने मुझे पकड़ लिया और थाने ले गई। बैंकाक बसे बन्दे की सहायता से मैं जस-तस छूटा और फिर धन्धा करने लगा। लेकिन थाईलैण्ड सरकार ने वीजा नवीनीकरण का समय दो की जगह एक महीना कर दिया। ऐसे में बैंकाक 11 महीने रहने के बाद मैं लौट आया। थाईलैण्ड में लोग हँस कर बोलना पसन्द करते हैं और फेरी लगा कर डरते-डरते सामान बेचते हुये भी मुझे वहाँ अच्छा लगा।

ठेकेदारी भी की

बैंकाक से लौट कर कुछ दिन गाँव रह कर फरीदाबाद आ गया। पटरी पर पुनः कपड़े बेचना शुरू किया। उसे छोड़ एक फैक्ट्री से ढले एल्युमिनियम की फाइलिंग का ठेका लिया। उसे छोड़ फिर पटरी पर कपड़े बेचने लगा। फिर सिले-कढे वस्त्रों का निर्यात करती फैक्ट्रियों से पीस रेट पर हाथ की कढाई का काम ला कर झुग्गियों में औरतों से करवाया...... और 2002 के आने तक मैं स्वयं मजदूर बन गया।

मजदूर के नाते दिनचर्या

गाँव में कुछ खेती है – पत्नी व बच्चे वहाँ रहते हैं तथा मैं यहाँ झुग्गियों में रहता हूँ। जब धन्धे करता था तब 7-8 बजे उठता था लेकिन अब सुबह सही साढे पाँच बजे उठ जाता हूँ। बाहर खुले में टट्टी जाना पड़ता है। फिर साढे छह तक भोजन तैयार कर लेता हूँ। नहा-खा कर तैयार हो सवा सात बजे स्टेशन के लिये निकल पड़ता हूँ और 7.40 की गाड़ी पकड़ता हूँ।

ट्रेन में बहुत भीड़ होती है। तुगलकाबाद स्टेशन पर 8.10 तक गाड़ी पहुँच जाती है। विशाल रेलवे यार्ड की लाइनें पार कर तेखण्ड पहुँचने में 20 मिनट लग जाते हैं और फिर उसके आगे फैक्ट्री पहुँचने में 15 मिनट। पौने नो कम्पनी पहुँच कर मैं गेट पर चाय की दुकान पर दस मिनट अखबार पढता हूँ – चाय नहीं पीता। नो में 5 मिनट रहते हैं तब पहली घण्टी बजती है और मैं गेट पर कार्ड पंच कर अन्दर जा कर मशीन साफ करता हूँ। नो बजे दूसरी घण्टी बजती है और काम शुरू हो जाता है।

9 से साढे बारह बजे तक कोई ब्रेक नहीं, चाय-वाय कुछ नहीं, लगातार काम करना पड़ता है। मैं उत्पादन कार्य में हूँ। सुपरवाइजर तथा इन्चार्ज लाइन पर घूमते रहते हैं, सिर पर खड़े रहते – टारगेट चाहिये! हमारे दिमाग में टारगेट पूरा करना ही घूमता रहता है।

काम चेन सिस्टम से होता है। कमीज को ही लें तो कोई कॉलर का कच्चा काम करेगा, कोई फिर पक्का, कोई साइड जोड़ेगी, कोई जेब ... एक कमीज 22-25 कारीगरों के हाथों से गुजर कर बनती है जबकि कपड़ा हमें कम्पनी की दूसरी फैक्ट्री से कटा हुआ मिलता है। उत्पादन के बाद फिनिशिंग में भी एक कमीज 25-30 के हाथों से गुजरती है। हर कमीज को तैयार करने में 50-55 मजदूरों के हाथ तो सिलाई-सफाई में ही लगते हैं। स्त्री व पुरुष मजदूर लाइन पर अगल-बगल में काम करते हैं और जहाँ मैं काम करता हूँ वहाँ तीस प्रतिशत महिलायें हैं। स्टाइल अनुसार आठ घण्टे में 800-1000-1200 कमीजों का दिया हुआ हिस्सा प्रत्येक कारीगर को तैयार करना पड़ता है। महीने में दो-तीन स्टाइल बदलती हैं।

साढे बारह से एक भोजन अवकाश। फैक्ट्री में कैन्टीन नहीं है। उत्पादन कार्य तहखाने में होता है और फैक्ट्री की तीसरी मंजिल के ऊपर एस्बेस्टोस चद्दरें डाल कर भोजन के लिये कम्पनी ने मेज-कुर्सी लगाई हैं। ज्यादातर मजदूर खाना साथ लाते हैं। हाथ धोने, पानी लेने, भोजन करने में ही आधा घण्टा निकल जाता है – बातचीत के लिये समय होता ही नहीं।

एक बजे घण्टी बजती है और मशीनों पर काम शुरू हो जाता है तथा पौने चार तक लगातार चलता है। तब 15 मिनट का पहला टी-ब्रेक होता है और फैक्ट्री से बाहर निकल कर हम चटपट चाय पीते हैं। चार बजे फिर शुरू हो कर साढे पाँच तक काम चलता है। ओवर टाइम लगता है तब पौने छह बजे 15 मिनट चाय पीने के लिये देते हैं और फिर रात साढे आठ तक काम होता है। ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से देते हैं। वैसे, जो आर्डर देते हैं, अमरीका-रूस-जर्मनी-जापान के बायर हैं उनका निर्देश है कि ओवर टाइम नहीं होगा। उनके निर्देश तो कार्य के वक्त टोपी व मास्क पहनने, सूई से रक्त निकलने पर दवाई, आदि-आदि के भी हैं। चार-छह महीने में उनका दौरा होता है तब दो-चार दिन के लिये यह सब तामझाम होता है और मैनेजर के कहे अनुसार उत्तर देने वाले लोग भी तैयार रखे जाते हैं।

गाड़ी की वजह से फरीदाबाद वाले वरकरों का ओवर टाइम साढे सात तक होता है। जो हो, थकावट के कारण स्टेशन पहुँचने में सुबह के 35 की जगह 40 मिनट लग जाते हैं। पौने सात अथवा 8.20 की गाड़ी से 7.10 अथवा पौने नो बजे रात यहाँ स्टेशन पर उतरता हूँ और फिर थके जिस्म से बीस मिनट पैदल मार्च।

मण्डी से सब्जी लाना, दुकान पर अखबार पलटना, कपड़े धोना..... यह तो शुक्र है कि मुझे रात का भोजन नहीं बनाना पड़ता। झुग्गियों में ही रहती मेरी बहन बना देती है और मैं उसे महीने में खुराकी के 300-350 रुपये दे देता हूँ। यह भी शुक्र है कि पीने के पानी का एक डिब्बा पड़ोसी रोज भर देते हैं। नहाने-धोने के लिये 3-4 ड्रम मैं हफ्ते में एक दिन भरता हूँ।

रात को 9-10 बजे भोजन करता हूँ और 11 बजे तक सो जाता हूँ।

चिन्ता-चिन्तन

अपने लिये समय कहाँ मिलता है। सारा टाइम तो खत्म हो गया – सुबह साढे पाँच से रात ग्यारह!

परिवार गाँव में है। साल हो गया पत्नी और बच्चों से मिले। महीने में 800-1000 रुपये घर भेजता हूँ। थोड़ी खेती भी तो है।

दिमाग में ज्यादातर पीछे की बातें आती रहती हैं। पहले पैसे अधिक कमा रहा था और खर्चे कम थे जबकि अब खर्चे बढ गये हैं और कमाई कम हो गई है। मजदूर तो बन ही गया हूँ, अब आगे पता नहीं क्या होगा। सिले-कढे वस्त्रों के निर्यात की लाइन में अभी कारीगरों को तनखा समय पर मिल जाती है। लेकिन सरकार द्वारा निर्धारित न्यूनतम वेतन भी कम्पनियाँ नहीं देती और नौकरी से निकाले जाने तथा फिर लग जाने का तो अटूट-सा सिलसिला चल पड़ा है।

चौतरफा मजबूरी ही मजबूरी है ऐसे में अच्छा भला क्या लगेगा? मन तो बहुत-कुछ को करता है परन्तु मन माफिक तो कुछ होता नहीं। बुजुर्गों को दो पैसे के लिये धक्के खाते देखता हूँ तो मन को बहुत बुरा लगता है। ऐसे लगता है कि जिन्दगी बस एक टाइम पास बन गई है...... आज रविवार की छुट्टी के दिन भी फैक्ट्री में काम करके आया हूँ।" (जारी)

डाक पता : मजदूर लाईब्रेरी,
आटोपिन झुग्गी,
एन.आई.टी. फरीदाबाद–121001

कड़वी मिठाई

बात 94 की है। उस समय मैं फरीदाबाद में सराय के पास स्थित **यूनिवर्सल कनवेयर बैल्टिंग लिमिटेड** में टेक्निकल ट्रेनी था। फैक्ट्री में सीमेन्ट प्लान्टों आदि में मैटेरियल फ्लो के लिये 6-10-12 फुट चौड़ी बैल्ट बनती थी। आर्डर आने पर 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट कर देते थे। बाकी समय महीने में 15 दिन फैक्ट्री चलती थी और 15 दिन ले-ऑफ लगा देते थे। काम कम था।

दिवाली आई। कम्पनी घाटे में चल रही है कह कर मैनेजिंग डायरेक्टर मोहता ने मजदूरों को मिठाई नहीं देने का निर्णय पहले ही सुना दिया था पर स्टाफ के बारे में ढुलमुल था। फिर साहब ने स्टाफ को भी मिठाई नहीं देने का ऐलान कर दिया। लेकिन दिवाली से दो दिन पहले बढिया पैकिंग में मेवे और मिठाई के 100 डिब्बे फैक्ट्री के अन्दर आये। किनके लिये? बिजली बोर्ड, सेल्स टैक्स, बैंक, श्रम विभाग, पुलिस आदि-आदि के अधिकारियों के लिये। पहुँचाने का काम स्टाफ ने किया।

6 महीने बाद मई 95 में फैक्ट्री बन्द हो गई। उस समय मजदूरों व स्टाफ की डेढ महीने की तनखा बकाया थी — अब तक बकाया है। कम्पनी को बन्द हुये 8 साल हो गये हैं लेकिन वरकरों को हिसाब नहीं दिया गया है। 1991 से 95 में फैक्ट्री बन्द होने के बीच का प्रोविडेन्ट फण्ड भी कम्पनी ने जमा नहीं करवाया है। फैक्ट्री पर ताला लगा है।

वाक-इन-इन्टरव्यू

तत्काल नौकरी का दौर है। कुछ समय पहले गुड़गाँव में सैक्टर-18 स्थित **विमल मोल्डर लिमिटेड** ने अखबारों में बहुत रिक्त पदों का इश्तिहार दिया और शनिवार के दिन कुछ बिभागों के लिये वाक-इन-इन्टरव्यू में पहुँचने को कहा।

फरीदाबाद से मैं उस शनिवार को निर्धारित समय सुबह साढे दस बजे गुड़गाँव पहुँचा। स्टाफ के पदों के लियें इन्टरव्यू था। तीस-चालीस पहुँचे थे। हमें फैक्ट्री के अन्दर बैठा दिया। इन्तजार में 4-5 घण्टे बीत गये तब जनरल मैनेजर ने आ कर कहा कि एक महत्वपूर्ण मीटिंग के कारण आज इन्टरव्यू नहीं होंगे तथा अगले दिन साढे दस बजे आयें।

रविवार को छुट्टी के कारण मेरठ, फरीदाबाद, दिल्ली, नोएडा, गाजियाबाद से ज्यादा लोग पहुँचे। साढे दस बजे गुड़गाँव में फैक्ट्री गेट पर 50-60 लोग हो गये। सेक्युरिटी ने हमें फैक्ट्री के अन्दर ही नहीं जाने दिया और बोला कि जी एम साहब का आदेश है कि इन्टरव्यू 3 बजे आरम्भ होंगे। फिर इन्तजार हुआ — इस बार सड़क पर। पहला इन्टरव्यू 6 बजे शाम शुरू हुआ। बाहर से आये लोगों का इन्टरव्यू पहले लेने का अनुरोध ठुकरा दिया गया। आठ बजे रात कई अन्य लोगों के साथ मैं भी बिना इन्टरव्यू दिये वहाँ से चल पड़ा।

और बातें यह भी

बेलमोन्ट रबड़ मजदूर : "प्लॉट 58 बी इन्डस्ट्रीयल एरिया स्थित फैक्ट्री में पीने के पानी की व्यवस्था तक नहीं है और कम्पनी आई एस ओ ले चुकी है। फैक्ट्री में भर्ती किये 15 कैजुअल वरकरों को कम्पनी 1300-1400 रुपये महीना तनखा देती है। ठेकेदार के जरिये भी कम्पनी ने वरकर रखे हैं — इनमें काफी कम उम्र के लड़के भी हैं और इन्हें 1000 रुपये महीना तनखा दी जाती है। कम तनखा वालों से रबड़ बफिंग का बहुत ही गन्दा काम करवाया जाता है — ई.एस.आई. तथा पी.एफ. नहीं है।"

स्टार वायर वरकर : "बल्लभगढ में मथुरा रोड़ पर स्थित फैक्ट्री में कागज-वागज का सारा काम कम्पनी करती है, हम से काम भी कम्पनी करवाती है। हम ने ठेकेदार देखा तक नहीं है। फैक्ट्री में एक्सीडेन्ट बहुत होते हैं। ज्यादा चोट लगने पर कम्पनी कोई क्षतिपूर्ति नहीं देती और कहती है कि तुम ठेकेदार के वरकर हो।"

गैलेक्सी इन्स्ट्रुमेन्ट्स मजदूर : "प्लॉट 2 सैक्टर-27 सी में कम्पनी उत्पादन हाई माँगती है, क्वालिटी हाई माँगती है लेकिन गर्मियों में पीने का ठण्डा पानी तक नहीं देती। बात-बात पर साहब गाली देने लगा है।"

एस.पी.एल. वरकर : "प्लॉट 21 व 22 सैक्टर-6 स्थित फैक्ट्री में हम कारीगरों को ठेकेदार के जरिये रखा है। ई.एस.आई. और पी.एफ. की राशि हमारी तनखा में से काटते हैं। हमें ई.एस.आई. कार्ड नहीं देते। प्रोविडेन्ट फण्ड 6 महीने काटने के बाद 2 महीने काटना बन्द कर देते हैं हालाँकि हम फैक्ट्री में काम करते रहते हैं। छह महीने का फण्ड निकलवाने के लिये फार्म भर कर दे देते हैं।"

कल्पना फोरजिंग मजदूर : "प्लॉट 35 सैक्टर-6 स्थित फैक्ट्री में लगते नये वरकरों को एक सुपरवाइजर बहुत गालियाँ देता है।"

फर आटो वरकर : "15/3 मथुरा रोड़ स्थित फैक्ट्री में हमारी 8 महीनों की तनखायें खाये बैठी मैनेजमेन्ट ने इधर मार्च, अप्रैल और मई की तनखायें हमें आज 24 जून तक नहीं दी हैं। फैक्ट्री की बिजली कटी हुई है और जनरेटर से मैनेजमेन्ट हम से मन्चूर इन्डस्ट्रीज का काम करवा रही है। धमकाने के लिये चार दादा-टाइप लोग भी रखे हैं।"

शक्ति इंजिनियरिंग मजदूर : "प्लॉट 79 सैक्टर-6 में हमें अप्रैल और मई की तनखायें आज 24 जून तक नहीं दी हैं। यह तो न जीने देना है और न मरने देना। इससे अच्छा तो फरीदाबाद खत्म हो जाये ताकि नौकरी की आस छोड़ कर हम रोटी का कोई और जुगाड़ करें।"

कुछ फुरसत में

लखानी रबड़ उद्योग मजदूर : "प्लॉट 234-235 सैक्टर-24 स्थित फैक्ट्री में ओवर टाइम काम के लिये कम्पनी जबरन रोकती है। सुबह 8 बजे से रात 2 बजे तक रोक लेते हैं — 12 घण्टे की ड्युटी करने के बाद रात 8 बजे बाहर निकलते समय कई बार कम्पनी फैक्ट्री गेट से पकड़ कर जबरन वापस काम पर ले जाती है। फैक्ट्री में काम करते 450 मजदूरों में आधे परमानेन्ट हैं और आधे कैजुअल वरकर। गर्म काम है और गर्मियों में ज्यादातर मशीनों पर पँखे नहीं हैं — कैजुअल वरकर को पँखा माँगने पर नौकरी से निकाल देते हैं। गर्मियों में ऐसे माहौल में 12-18 घण्टे काम करो! और, रात 2 बजे फैक्ट्री से निकल कर कमरे जाते समय रास्ते में पुलिस की गालियाँ-डण्डा खाओ। रविवार को छुट्टी के दिन भी 8 घण्टे की ड्युटी करनी पड़ती है। ओवर टाइम काम का भुगतान भी कम्पनी डबल रेट से नहीं करती — परमानेन्टों को डेढ की दर से और कैजुअल वरकरों को सवा की दर से पैसे देते हैं। ओवर टाइम के दौरान एक कप चाय तक लखानी कम्पनी नहीं देती, भोजन के लिये पैसे देना तो बहुत दूर की बात है। काम का बोझ बहुत ही ज्यादा है — 12-18 घण्टे खड़े-खड़े ही लगे रहना पड़ता है। जब इस प्रकार काम करते 9-10 महीने हो जाते हैं तब जबरन हस्ताक्षर करवा कर नौकरी से निकाल देते हैं। बीमार होने पर भी कैजुअल वरकर 2 दिन ड्युटी नहीं पहुँचा तो उसे नौकरी से निकाल देते हैं। परमानेन्ट मजदूर तक 3 दिन किसी भी कारण से छुट्टी कर लेता है तो उसका गेट रोक देते हैं और चक्कर कटवा कर ड्युटी लेते हैं। लखानी ग्रुप की प्लॉट 219 सैक्टर-24 स्थित फैक्ट्री में भी ऐसे ही हालात हैं — वहाँ पँखे के तो दर्शन ही नहीं होते।"

मजदूर समाचार में साझेदारी के लिये:

✱ अपने अनुभव व विचार इसमें छपवा कर चर्चाओं को कुछ और बढवाइये। नाम नहीं बताये जाते और अपनी बातें छपवाने के कोई पैसे नहीं लगते। ✱बाँटने के लिये सड़क पर खड़ा होना जरूरी नहीं है। दोस्तों को पढवाने के लिये जितनी प्रतियाँ चाहियें उतनी मजदूर लाइब्रेरी से हर महीने 10 तारीख के बाद ले जाइये। ✱बाँटने वाले फ्री में यह करते हैं। सड़क पर मजदूर समाचार लेते समय इच्छा हो तो बेझिझक पैसे दे सकते हैं। रुपये-पैसे की दिक्कत है।

महीने में एक बार छापते हैं, 5000 प्रतियाँ फ्री बाँटते हैं। मजदूर समाचार में आपको कोई बात गलत लगे तो हमें अवश्य बतायें, अन्यथा भी चर्चाओं के लिए समय निकालें।

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक एवं सम्पादक शेर सिंह के लिए जे० के० आफसैट दिल्ली से मुद्रित किया। **RN 42233 पोस्टल रजिस्ट्रेशन L/HR/FBD/73**
सौरभ लेजर टाइपसैटर्स, बी—546 नेहरु ग्राउंड, फरीदाबाद द्वारा टाइपसैट।